IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जौनपुर के शर्कीयुगीन स्थापत्यकला का संक्षिप्त इतिहास

[1]Dr.Manjeet Kumar Yadav, [2]Anurag Singh Yadava

[1]M.A , Ph.D (History), [2]Assistant Professor

[1]V B S P U JAUNPUR U.P.,

[2]Shri Devi Prasad P.G. College Janghai, Prayagraj, U.P.

जौनपुर की स्थापना फिरोज"ाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई जौना खॉ की स्मृति में की थी। जौनपुर में स्वतन्त्र भार्की राजव"ा की स्थापना नासिरूद्दीन महमूद का वजीर मलिक सरवर (ख्वाजा जहांन) ने की थी। ख्वाजा जहांन को सुल्तान महमूद ने मलिक –उस–"ार्क (पूर्व का स्वामी) की उपाधि 1394 ई0 में दी थी। भार्की युगीन मस्जिदों, मकबरों, किलों तथा मजारों के बारे मं अध्ययन करने के उपरान्त हम इस निश्कर्श पर पहुॅचते है कि भार्की प्र"ासकों का दौर वास्तुकला का स्वर्णिम युग था। उस अवधि में यहॉ की भवन निर्माण कला की समानता वि"व का कोई दे"ा नही कर सका था। एक प्रान्तीय भासक की हैसियत से भार्की सुल्तानों द्वारा प्रस्तुत की गई वास्तुकला न केवल भारत, बल्कि वि"व के लिए गौरवपूर्ण बात है। लोदी सुल्तान सिकन्दर यदि भार्की वास्तुकला को विनश्ट न किया होता तो वि"व पटल पर आधुनिक युग में भार्की वास्तुकला ही दिखलाई देता।

मध्यकालीन भारत के इतिहास में भार्की युगीन वास्तुकला इब्राहिमभााह भार्की एवं हुसैनभााह भार्की के समय अपने चर्मोत्कर्श पर थी। भार्कीयुगीन जो भवन आज बचे है। उनसे मुख्यतः मस्जिदें, मकबरे व मजारें विनश्ट किलों एवं महलों के खण्डहर के रूप में पड़े है। बचे भवनों में सबसे सुन्दर एवं आकर्शणयुक्त इब्राहिम भााह भार्की द्वारा निर्मित 1408 ई0 की अटाला मस्जिद है। इस मस्जिद की सुन्दरता एवं भव्यता इसके निर्माताओं के उच्च बौद्विक स्तर को द"ार्ाता है। भार्की युगीन अन्य मस्जिदें अटाला मस्जिद की भौली पर ही निर्मित की गयी है। भार्की वास्तुकला का अन्तिम उदाहरण जौनपुर की जामा मस्जिद है, जिसे 1470 ई0 में हुसैन भााह भार्की ने बनवाया था। इस मस्जिद के उत्तरी भाग में स्थित खानकाह तथा भार्की सुल्तानों के मकबरों को सुल्तान सिकन्दर लोदी ने तोड़वा दिया, साथ ही साथ इस मस्जिद के पूर्वी भव्य द्वारा को भी नश्ट करवा दिया क्योंकि पूर्वी द्वार पर भार्कियों की यादगार इमारतें खुदी हुई थी। भार्की युगीन स्थापत्य कला के क्षेत्र में इब्राहिम भााह भार्की ने अटाला मस्जिद के अलावा झॅझरी मस्जिद 1430 ई0 में व खलीस मुखलिस मस्जिद

का निर्माण करवाया। महमूद भााह की बेगम बीबी राजी द्वारा 1450 ई0 में लाल दरवाजा मस्जिद का भी निर्माण करवाया गया था। यह मस्जिद जौनपुर के संत मौलाना सैय्यद अली दाऊद कुतुबुद्दीन को समर्पित है।

जौनपुर के भार्की स्थापत्य कला की वि"ोशताओं में कंगूरेदार दीवालें, गुम्बदीय बुर्ज, मेहराबी कक्ष तथा मेहराबनुमा गैलरिया तुगलक कालीन स्थापत्य कला से मिलता–जुलता है। भार्की स्थापत्य कला की सबसे प्रमुख वि"ोशता इसकी मस्जिदों में प्रयुक्त किया गया तोरणद्वार है। तोरणद्वारों की भव्यता एवं वि"ालता ही भार्की स्थापत्य कला की वि"ोश पहचान है। इन तोरणद्वारों में मेहराबी व्यवस्था का प्रचलन कर भार्की सुल्तानों ने मध्ययुगीन इमारतों की बनावट को स्थापत्य कला के क्षेत्र में भीर्श स्थान पर पहुॅचा दिया।

जौनपुर की जामा मस्जिद जिसमें पि"चमी दि"ा में केन्द्रीय कक्ष के दोनों तरफ दो ढलुआदार छतों से युक्त वि"ाल कक्ष जिसकी छतें पत्थरों के लिंटरों पर टिकी हुई है। इसकी सम्पूर्ण संरचना अपने आप में न केवल भार्की बल्कि भारतीय वास्तुकला का एक अनुपम उदाहरण है। इन भव्य कक्षों की बनावट पंडुवा की अदीना मस्जिद से बने हालों से मिलता–जुलता है, जिसे बंगाल के भासक सिकन्दर भााह ने 1373 ई0 में बनवाया था। भार्की स्थापत्य कला की प्रमुख वि"ोशताओं में महिलाओं के लिए मस्जिद जैसे पवित्र स्थान पर बराबर के स्थान को बनाये रखने के लिए तथा उनमें नमाज एवं प्रवचन इत्यादि को पढ़ने एवं सुनने के लिए जनाना गैलरी का निर्माण उसे अन्य स्थापत्य कला से अलग करता है। जनाना गैलरी को परदा प्रथा को ध्यान में रखते हुए जालियों से घेर दिया गया है। इनमें प्रका"ा की व्यवस्था के लिए छत के ऊपरी भाग में मेहराबी खिड़कियां बनायी गयी है, जिनसे प्रका"ा अन्दर आता है। महिलाओं के लिए प्रवे"ा हेतु अलग से प्रवे"ा–द्वार बनाये गये है जिन्हें जामा मस्जिद जौनपुर के केन्द्रीय कक्ष के उत्तरी एवं दक्षिण दि"ा में देखा जा सकता है। इन गैलरी के छतों के अन्दरूनी हिस्से में भी आकर्शक नक्काि"ायॉ तरा"ाी गयी है। भार्की वास्तुकला की तुलना जब हम दिल्ली के सैय्यदों एवं लोदियों द्वारा निर्मित स्मारकों से करते है, तो देखते है कि केवल कुछ मकबरें ही जसे मुबारक"ााह, अलाउद्दीन आलम भााह और बदायूं में उसके परिवार के मकबरों से मिलता–जुलता है। ये सभी मकबरें खुले खेमें की तरह है। इनक चारों तरफ दिवालें है, जिसका वि"ोश महत्व नहीं है। इनमें से केवल कुछ चीजें, जैसे–ऊपरी सतह पर प्रयुक्त की गयी नीली टाइल्स तथा गुम्बदों के ऊपर कमल के फूल की बनायी गयी परिरूप ही कुछ नयी चीज है।

जौनपुर के भार्की कालीन भवन निर्माताओं ने बड़ी संख्या में मस्जिदों , महलों, किलों, मकबरों तथा मजार में नीली टाइल्स का इस्तेमाल किया है। भार्की किलों के मुख्य द्वारों पर भी नीली टाइल्सों को प्रयोग में लाया गया है। भवन निर्माण के क्षेत्र में भार्कीकालीन स्थापत्य कला प्रगति की पराकाश्ठा पर थीं। इस सम्बन्ध में काजी गौस आलम ने सलातीन–ए–जौनपुर में वर्णित किया है कि भार्कियों का प्रत्येक राजमहल एक–दूसरे से लगभग 150 कदम की दूरी पर स्थित था। यह स्थान 30 एकड़ के क्षेत्रफल में स्थित था। खास हौज (मुख्य सरोवर) के चारों तरफ महिलाओं के लिए तथा पुरूशों के लिए अलग–अलग घाट बनाये गये थे। इस हौज के दक्षिण एवं पूर्वी दि"ाा में एक भााही महल बना हुआ था, जो रौ"ान महल के नाम से प्रसिद्व था। इसी से लगा हुआ एक महल(अन्तःपुर) बना हुआ था, जो जन्नत महल के नाम से जाना जाता था। यह राजमहल बहुत अधिक सुसज्जित किया गया था। इस महल के मुख्य द्वार पर एक कुमकुमा का लैम्प लगा हुआ था, जो स्वयं जलता एवं बुझता था। इन भार्की महलों का निर्माण वास्तुकार मुहम्मद खॉ की देखरख में सम्पन्न हुआ था। जो तैमूर के आकमण के समय दिल्ली की अफरा–तफरी से घबड़ा कर जौनपुर आये थे। भार्की सुल्तानों द्वारा इन्हें राजकीय संरक्षण प्राप्त था।

स्थापत्य कला के क्षेत्र में भार्कीयुगीन जौनपुर के अध्ययनोंपरान्त हम इस निश्कर्श पर पहुॅचते है कि वास्तव में भार्की सुल्तानों का समय स्थापत्य कला का स्वर्ण युग था। जौनपुर के भार्की सुल्तानों के नाम को उनके द्वारा निर्मित वास्तुकला ने इतिहास के मध्ययुगीन भारत में एक नई ऊॅचाइयों तक पहुॅचाया।

सन्दर्भ–सूची :–

1–जौनपुर जनपद का गजेटियर।

2–मुहम्मद गौस अली–सलातीन–ए–जौनपुर।

3–अहमद इम्तियाज–'मध्यकालीन भारत का इतिहास' जनरल बुक एजेन्सी, पटना 1990।

4–मियॉ मुहम्मद सईद– द भार्की सल्तनत ऑफ जौनपुर।

5–स्वयं सर्वेक्षण के द्वारा।